RE: STATEMENT BY MINISTER OF HOME AFFAIRS

Mr. Speaker: The House will now take up the demands for grants.

Shri S. M. Banerjee: Sir, before that, may I request you to ask the Minister to make a statement about what happened in Rourkela?

Mr. Speaker: This was raised earlier and I have said that a statement is going to be made. I will ask him whether it can be made today.

11.18 hrs.

DEMANDS FOR GRANTS—*contd.*
MINISTRY OF DEFENCE—*contd.*

Mr. Speaker: The House will now take up further discussion and voting on the Demands for Grants under the control of the Ministry of Defence. Shri Kashi Ram Gupta will continue his speech.

श्री काशी राम गुप्त (अलवर) : अध्यक्ष महोदय, कल मैं ए० एस० सी० सेंटर, अलवर के बारे में कुछ उदाहरण दे कर यह बता रहा था कि यदि फ़ौज में भी लापरवाही और अंधाधुंध तथा योजनारहित कार्य हुए, तो उस के नतीजे कभी भी अच्छे नहीं हो सकते हैं, चाहे हम उस पर कितना भी रुपया खर्च क्यों न करें। मैं अलवर का एक छोटा सा उदाहरण और देना चाहता हूं।

वहां पर एक जुनियर एन० सी० सी० कैम्प खुला था। उस के समापन-समारोह के अवसर पर एक लैफ्टिनेंट-कर्नल साहब को आना था। ठीक पांच बजे जब हम वहां पहुंचे, तो वहां कुछ भी इन्तजाम नहीं था। मालूम हुआ कि राजस्थान के एक एयर-कामोडोर साहब आये हैं और वह सब काम को गड़बड़ कर गये हैं और उन को साथ ले गये हैं। वहां पर जो मेजर साहब काम कर रहे थे, जब उन से मालम किया गया, तो उन्होंने कहा कि हम किसी सभापति की तलाश में हैं और हम ने किसी महिला को, किसी आफ़िसर की धर्म-पत्नी को, बुलाया है। उनके आने पर वहां की कार्यवाही इतनी उपेक्षा और गड़बड़ में हुई कि वे राष्ट्रीय गीत, "जन-गण-मन" को भी भूल गये। जब मैं ने इस के बारे में मेजर साहब को कहा, तो वह कहने लगे कि भाई, प्रजातंत्र के राज में तो ऐसा ही होगा। उनका इशारा इस तरह का था कि जिस तरह पाकिस्तान में अयूब साहब का राज्य है, वैसे ही फ़ौजी शासन यहां भी होना चाहिए। यह मनोवृत्ति क्यों है? इसका खास कारण यह है कि प्रजातंत्रीय प्रणाली में जो कमजोरियां हैं, उन से लोग ऊब गये हैं। उनको ठीक करने की तरफ हमारा ध्यान नहीं जाता है।

इस बजट में लगभग सवा चार सौ करोड़ रुपये सामान इत्यादि पर खर्च होने जा रहा है। सामान को लेने की जो प्रणाली है, सप्लाइज़ लेने की जो प्रणाली है, वह भी वही प्रणाली है जोकि दूसरे मंत्रालयों में, दूसरे महकमों में चलती है। उसी प्रकार इस में भी भ्रष्टाचार चलता है। नतीजा यह होता है कि रुपया ठीक तरह से खर्च नहीं हो पाता है। यदि सुरक्षा मंत्री जी इसकी निष्पक्ष जांच करवायें तो उन को मालूम हो जायेगा कि करोड़ों रुपये की उस में बचत हो सकती है। करोड़ों रुपया बेकार और बूरी तरह से खर्च किया गया है जोकि बच सकता है। यह मैं अपने थोड़े से अनुभव के आधार पर कह रहा हूं, एक छोटे से ए० एस० सी० सेंटर पर जो खर्च में ला-परवाही बरती गई है, उसको देख कर कह रहा हूं।

शासन के कामों में दखल देने की प्रवृत्ति कांग्रेस के भीतर यहां तक बढ़ गई है कि फौज के अफसर भी अब यह चाहते हैं कि किसी नेता के जरिये से हमारी सिफारिश हो जाये। इस प्रकार के उदाहरण मेरे सामने आये हैं और इस बात को मैं गम्भीरता से आपके सामने रख रहा हूं। यदि फौज के